राउतनाचा में अभिव्यक्त होता छत्तीसगढ़ी लोक

मुरारी उपाध्याय

छत्तीसगढ़ प्राकृतिक संसाधन संपन्न व सुंदरता के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक विविधता के लिए जाना जाता है, यहाँ की भौगोलिक स्थिति, लोकसंस्कृति, लोकगीत, लोक नृत्य, रीति-रिवाज, तीज-त्यौहारों का अद्भुत संगम है, जो छत्तीसगढ़ी आंचलिकता से पल्लवित हुई है। अपनी इसी विशिष्ट व अनोखी परंपरा के कारण न सिर्फ भारत में ही, अपितु विश्वपटल पर सांस्कृतिक वैभव के लिए प्रसिद्ध है।

राउत नाचा छत्तीसगढ़ का प्रसिद्ध लोक नृत्य है। इस नृत्य को गहिरा नाच के नाम से भी जाना जाता है। दीपावली (देवउठनी एकादशी) से पूर्णिमा के दिन तक यह नृत्य चलता है। राउत नृत्य में बालक, किशोर, युवा व प्रौढ़ सभी वर्ग के लोग शामिल होते हैं। साथ ही दो-तीन लड़के महिला परिधान धारण कर साथ में नृत्य करते हैं, जिसे छत्तीसगढ़ी में 'परी' कहा जाता है। राउत (यादव) नृत्य, शौर्य व श्रृंगार का नृत्य है, जो दो शब्दों से मिलकर बना है पहला 'राउत' और दूसरा 'नाचा', राउत अर्थात् यादव, ठेठवार, अहीर, पहाटिया, बरदीहा, आदि नामों से जाना जाता है। नाचा का अर्थ इन यादवों के द्वारा सामूहिक रूप से क्रियान्वित नृत्य को कहा जाता है।

राउत नाचा के इतिहास की बात करें तो यदुवंशियों का संबंध आदिकाल से जुड़ा हुआ है। शास्त्रों व जनश्रुति के आधार पर यह मान्यता है कि यदुवंशी भगवान श्री कृष्ण के वंशज हैं। यह सर्वविदित है कि स्वयं भगवान श्रीकृष्ण यदुवंश (कुल) से थे। अगर यदुवंशियों का प्रमुख कार्य देखा जाए तो गौ-पालन करना, पशुओं को चारा चराना, दूध का व्यवसाय करना है। चूंकि छत्तीसगढ़ एक कृषि प्रधान राज्य है, इसलिए कृषि फसल आने के पश्चात् दिवाली पर्व पर पूरे छत्तीसगढ़ में राउत नाचा का प्रचंड रूप देखने को मिलता है। राउत (यादवों) में भगवान श्रीकृष्ण के दो रूप देखने को मिलते हैं। एक योद्धा रूप तो दूसरा नर्तक रूप हाथ में तेन्दु लकड़ी का डंडा योद्धा का व पैरों के घुँघरू नर्तक रूप का प्रतीक है। भगवान श्री कृष्ण 16 कलाओं में पारंगत माने जाते हैं। इसी तरह राउत (यादव) भी भगवान श्री कृष्ण की भांति नख-शिख तक साजो श्रृंगार किये रहते हैं। एकादशी के दिन भगवान श्री कृष्ण का कंस पर विजय के हर्षोल्लास पर नृत्य किया गया था। इन्हीं मान्यताओं के आधार पर आज भी यह परंपरा राउत (यादवों) द्वारा चली आ रही है।

यदुवंशी अपना आराध्य देव भगवान श्रीकृष्ण को मानते हैं। इनका प्रमुख आभूषण चमकीले सूती वस्त्र का कुर्ता उसके ऊपर कौड़ी से सुसज्जित जैकेट पहने हुए सिर में रंगीन पागा (पगड़ी) जिसमें कलगी लगी रहती है। चेहरे पर पीले रंग का (रामरज से) रंगा हुआ, आंखों में काला चश्मा व गले में तिलरी-सुतरी पहने हुए कमर में कौड़ी का करधन तथा नीचे घुटनों तक सफेद धोती या हाफ पैंट कसे रहते हैं। पैरों में लाल मोजे के ऊपर बड़े-बड़े घुँघरू पहनकर एक हाथ में सजी हुई तेन्दु लकड़ी के डंडे व दूसरे हाथ में ढाल लिए पैरों के एक ताल व गति से अलग-अलग भाव-भंगिमा के साथ नृत्य करते हैं।

यह दृश्य आम जन के मन में उत्साह का भाव पैदा कर उनके जीवन की नीरसता को दूर करता है।

राउत नाचा में प्रमुख वाद्य यंत्र के रूप में मोहरी, गड़वा (गुदरूम) बाजा, टिमरी, निशान, दफड़ा, ढोल, मांदर, नगाड़ा, झुनझुना, मंजीरा होते हैं। राउत नाच छत्तीसगढ़ की पहचान है। दीपावली के दूसरे दिन गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत बनाकर उसमें सिलयारी घास, धान की बालिया और गेंदाफूल से सजा कर पूजा-अर्चना करते हैं साथ ही गौ-माता के पैरों से गोवर्धन को खुदवा कर गोवर्धन से (गोबर) निकालकर एक-दूसरे के माथे पर टीका लगाते हैं, इसमें सभी ग्रामीण बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं, जिससे लोगों में भाईचारे व आपसी प्रेम सौहार्द का संदेश एक-दूसरे को आदान-प्रदान करते हैं। राउत नाचा के बीच-बीच में दोहे पारने का विधान है। दोहा राउत नृत्य का प्राण है। इन दोहों में कबीर, सुर, तुलसी, रहीम, रसखान के दोहों का गायन किया जाता है, साथ ही इनके दोहे वीर, श्रृंगार, हास्य व नीतिपरक भी रहते हैं, जिसके माध्यम से समाज की विसंगतियों पर करारा प्रहार करते हैं, वही अच्छी बातों की सराहना भी करते हैं। राउत नृत्य के दोहों में सामाजिकता व प्रगतिशीलता का अद्भुत मिश्रण भी देखने को मिलता है। राउत नृत्य का प्रारंभ देवी-देवताओं की वंदना से किया जाता है–

"जय महामाय रतनपुर के अखरा के गुरु बैताल।

चौसठ जोगनी पुरखा के, बईयाँ म होवे सहाय।"

इस दोहे के साथ ही सभी नर्तकों में एक गजब की स्फूर्ति आ जाती है और क्रमशः हरेक नर्तक बाजे को बीच-बीच में रुकवा कर अपना दोहा पारते हैं। दोहा पारने से पहले सांकेतिक रूप से उग्र होकर हवा में अपना डंडा लहराते हुए उछल कर 'अरररर', 'हो' की ध्वनि से प्रारंभ कर अंत में 'होय', या भाई-भाई का प्रत्यय लगा कर करते हैं–

जैसे–

"राम-राम के बेरा संगी, राम के गुण ल गाय हो।

जग के तारणहारी भैया, भौं सागर पर लागय हो।।"

राउत नाचा का यह आंचलिक पर्व पूरे छत्तीसगढ़ में राउत दल के द्वारा छोटी-छोटी टोली बनाकर गाँव के हर गली व मोहल्ले में प्रत्येक घर जाकर 'जोहार' (बन्दगी) किया जाता है। मालिक के धान को गोबर से मिलाकर कोठी में लगाया जाता है। साथ ही किसान की पशुधन गौ-माता के प्रति सम्मान व कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए 'सोहई' (मोर पंख व पलास वृक्ष के तना से हरे व लाल रंग लगाकर) रंगीन माला को गले में दोहा पारते हुए उत्तम स्वास्थ्य के लिए पहनाया जाता है। इसके बाद किसान की सुख, समृद्धि व संपन्नता का आशीष वचन दोहे पारकर दिया जाता है। साथ ही घर के मुखिया द्वारा शगुन के तौर पर राउत (यादवों) को धान, पैसा, कपड़ा व घर में बने पकवान आदि भेंट किया करते हैं। अहीर पत्नियाँ इसी दिन संध्या को महार व भेंगरा रंग से किसान के मुख्य द्वार पर व माई कोठी (धान रखने का स्थान) में हाथ से सुख-समृद्धि के लिए सुंदर चित्रकारी करती है। यह छत्तीसगढ़ी पर्व गाँव-समाज व पूरे छत्तीसगढ़ में एकता और अखंडता का परिचायक है।

छत्तीसगढ़ के अलग-अलग क्षेत्रों में इसी समय देवारी, मातर व मड़ई का आयोजन किया जाता है, जो राउत (यादवों) के प्रमुख त्यौहार शौर्य का प्रतीक माना जाता है। मड़ई की सुंदरता राउत नाचा पर ही आधारित रहती है। इनके भड़कीले आभूषण के बारे में पं. बलदेव प्रसाद मिश्र के अनुसार 'राउतों द्वारा धारण किये जाने वाली कौडी लक्ष्मी का प्रतीक है और मोर-पंख, मंत्र-तंत्र, अभिचार या अन्य विपत्तिरूपी सर्पों के प्रतिकार का प्रतीक है। मातर में गौठान (पशुधन को रखने का निश्चित स्थान) पर राउत नृत्य करते हुए हाथों में सजे हुए डंडे से अपने शौर्य का प्रदर्शन कर गौठान में ही गायों को 'सोहई' पहना कर में एकत्रित ग्रामवासियों में दूध बाँटा जाता है। मातर में भी प्रमुख केंद्र बिंदु राउत नृत्य ही रहता है। राउत (यादवों) द्वारा गाँव की रक्षा, पशुधन की सुरक्षा के लिए ठाकुर देवता, साहड़ा देवता, अखरहा देवता की पूजा कर सुख-समृद्धि की मन्नतें की जाती हैं।'

राउत नाचा में जिन दोहों का गायन किया जाता है, उसमें पौराणिक, प्राचीनता से लेकर नवीनता का समावेश किया जा रहा है। आधुनिक काल में जो समस्याएँ हैं, उन्हें नवीन दोहों के रूप में स्वयं रच कर गायन किया जा रहा है। इन दोहों में वीर, हास्य, व्यंग्य, तथा संत कवियों के ज्ञान व नीति के दोहों के मिश्रित रूप का गायन है, जो हमेशा आमजन को अपने साथ जोड़ने और जीवन में सुख-दुख की शिक्षा देते हैं। इसमें छत्तीसगढ़ की आंचलिकता, पशुधन, प्रकृति, खेती-बाड़ी जिनसे हम प्रभावित होते हैं तथा जिसे हम प्रभावित करते हैं, सभी बातों का समावेश प्रमुख रूप से कर रहे हैं। राउत नृत्य में जो उत्साह और वीरता का संचार न केवल नृत्य करने वाले सदस्य के अंदर उत्पन्न होता है, अपितु आमजन में भी यही भाव पैदा करता है, जिसके कारण सहज ही लोग इस नृत्य में मंत्र-मुग्ध होकर शामिल हो जाते हैं। प्रमुख दोहे व उनका भावार्थ–

"तुलसी चौरा अंगना, पीपर तरीया पार रे।

लहर लहर खेती करय, इसन गाँव हमार रे।।"

इस दोहे के माध्यम से अपने गाँव की सुंदरता व पर्यावरण की सुरक्षा का संदेश दे रहे हैं। तुलसी और पीपल के धार्मिक महत्व के साथ-साथ शुद्ध पर्यावरण के निर्माण में भी योगदान है। पर्यावरण का संरक्षण गाँव में ही हो पा रहा है। खेती का अर्थ न केवल धान, साग-भाजी, फल-फूल है, अपितु खेत-खलिहान में लगे वृक्षों के सम्मिलित रूप को कहा गया है–

"गाय हमर दाई बन, देवय हमला दूध।

खातू माटी तो बनय, ओखर गोबर मूत।।"

राउत नाचा हमारी धरती-प्रकृति व संस्कृति से जुड़ा हुआ है। इस दोहे में गाय व गोबर की महत्ता प्रतिपादित की गयी है। प्राचीन काल से हम खेती-बाड़ी में गोबर खाद का उपयोग करते आ रहे हैं। वर्तमान दौर में वैज्ञानिक भी रासायनिक खाद की अपेक्षा गोबर खाद को महत्व दे रहे हैं।

"गउचर परिया छोड़ दे, खड़े रहन दे पेड़। चारा चरही ससन भर गाय पठरू अउ भेड़।" वर्तमान समय में गाँव में बेजा कब्जा निरंतर बढ़ते ही जा रहा है, परिणामस्वरूप चारागाह भूमि विलुप्ति की कगार पर है। पहाटीया (यादव) जो गाँव में किसान के पशुओं को चराने का काम करते हैं, दिनभर खेत खलिहान जंगल में पशुओं के साथ रहते हैं, जिससे उनकी प्रकृति व पर्यावरण के बारे में अत्यधिक समझ होना स्वाभाविक है। वर्तमान समय में चारागाह के अभाव में यादवों के सामने पशु चारण की समस्या की ओर इंगित किया गया है–

"गली खोर अउ अंगना, राख लीप बहार।

रहिही चंगा देह हा, होए नहीं बीमार।।"

अर्थ-समय परिवर्तनशील है। वर्तमान दौर में दोहों में भी शिक्षा का प्रभाव आना स्वाभाविक है। स्वास्थ्य, शिक्षा व साफ-सफाई पर ध्यान देने की बात कही गयी है। "मोटर गाड़ी के धुँआ, करय हाल बेहाल। रुख, राई मन है कहाँ, जंगल है बदहाल।"

अर्थात् शहरीकरण व विकास के नाम पर पेड़-पौधों की कटाई हो रही है तथा अब वाहनों की पहुँच शहर से गाँव की ओर बढ़ रही है, जिससे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या की ओर हमें सचेत कर रहे हैं।

समग्र रूप से देखा जाए तो राउत नाचा छत्तीसगढ़ की माटी, गोधन गोबर, पर्यावरण, सामाजिक समरसता, भाई-चारा व सौहार्द का संदेश अपने इन दोहों के माध्यम से आम जन तक पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य के गौरव राउत नाचा को प्रोत्साहन मंच व संरक्षण प्रदान करने के लिए बिलासपुर जिले में सन् 1978 से डॉ. कालीचरण यादव के प्रयत्न से प्रत्येक वर्ष दिवाली (देवउठनी एकादशी) के पश्चात् प्रथम शनिवार को राउत नाचा महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। जहाँ अलग-अलग क्षेत्रों से यादवों की टोलियाँ अपनी विशेष साज-सज्जा और गाजे-बाजे के साथ पहुँचती है तथा क्रमवार अपने राउत नृत्य का प्रदर्शन करते हैं। उनके नृत्य, श्रृंगार, दोहों व अनुशासन के आधार पर शील्ड व प्रोत्साहन राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की जाती है। पहले के राउत नाचा में इनकी वेश-भूषा साधारण होती थी, परंतु राउत नाचा महोत्सव के बाद से एक प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा हुई है। फलतः इनके परिधान में खुमरी व कौड़ी के साथ आमूलचूल परिवर्तन व दोहों में नवीनता देखने को मिल रही है, जिससे छत्तीसगढ़ की इस अमूल्य संस्कृति का सवंर्धन करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल कह सकते हैं।

इसी तारतम्य में सन् 1987 से डॉ. कालीचरण यादव के संपादन में तथा उनके सहयोगियों के अथक प्रयास से 'मड़ई' नामक पत्रिका साल में एक बार निःशुल्क रूप में बिलासपुर से निकाली जा रही है, जिसमें प्रारंभ के कुछ वर्षों में विशेषकर राउत (यादव) जातियों की जीवन शैली, संस्कृति, रहन-सहन, खान-पान व उनके जीवन चित्र को प्रमुखता से सार्वजनिक फलक में लाने का प्रयास हो रहा है, ताकि छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति की इस महत्वपूर्ण कड़ी राउत नृत्य से न केवल छत्तीसगढ़, बल्कि संपूर्ण भारत के लोग उनके बारे में जान सके, उनसे जुड़ सकें। कालांतर में इस पत्रिका में अब न केवल छत्तीसगढ़ में, बल्कि देश के

अलग-अलग राज्यों की लोक-संस्कृति का राज्यवार विवरण दिया जा रहा है। इस दिशा में सन् 2000 से 'लोक मड़ई' नामक पत्रिका राजनाँदगाँव से निकाली जा रही है, जिसमें छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति, कलाकार, लोकविधा व लोक नृत्य पर विचार-लेख छप रहे हैं।

राउत नाचा छत्तीसगढ़ की पहचान व गरिमा है, जिसे आज सहेज कर रखना हमारे लिए चुनौतीपूर्ण हो गया है। पहले की तुलना में आज पशु-धन की संख्या प्रत्येक गाँव में कम होती जा रही है, जिसका कारण गाँव में पर्याप्त चारागाह का निरंतरर अभाव व बेजा कब्जा प्रमुख कारण है। यादवों के द्वारा आज पशुओं को चारा चराने के लिए बहुत ही कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। अपने परंपरागत कार्य व नृत्य को बनाये रखने में खुद के लिए चुनौतीपूर्ण हो गया है। आधुनिकता का प्रभाव अब गाँव में भी दिखने लगा है। किसानों के यहाँ 'कोठा', 'परसार' (गाय व चारा रखने का घर) ही विलुप्त होते जा रहा है। पहले गाय रखना किसान की संपन्नता का प्रतीक माना जाता था। यह कथन 1936 में प्रकाशित प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' में होरी (किसान) का जीवन चरित्र इसका उदाहरण है। अब लोग गाय रखना गवइहा व पिछड़ेपन की निशानी समझने लगे हैं। पहले हर घर दूध, दही, घी, गोबर, गोअर्क उप्लब्ध हो जाता था अथवा राऊत (यादवों) पर निर्भर होते थे। यह पंचगव्य अब बाजारों में पैकेट बंद उपलब्ध हो रहे हैं साथ ही गोबर से बने छेना (कंडा) की उपयोगिता गैस चूल्हा (उज्ज्वला योजना) के आने से नगण्य हो गयी है।

राउतों (यादवों) के जीविकोपार्जन व आजीविका का साधन किसानों का गौ-पालन व गौ-चारण रहा है। किसान पारिश्रमिक रूप में पाहटिया (यादवों) को धान दिया करते थे तथा रउताइन (अहीर पत्नियां) दूध, दही, घी, छेना, गोबर के कंडे बेचकर पति के आर्थिक संगठन में सहयोग करती थी। वर्तमान समय में राउतों (यादवों) के जीविकोपार्जन व अपने परंपरागत कार्य को करने के लिए गाँवों में जूझना पड़ रहा है। फलस्वरूप 'राउत नाचा' के प्रति स्वयं राउत (यादवों) में तथा ग्रामीणों के रुझान निरंतर कम होते जा रहे हैं।

ग्रामीण अंचल में पंचायत स्तर पर, जिला स्तर पर, राज्य स्तर पर 'राउत नाचा' को कोई बड़ा मंच व प्रोत्साहन न मिलने के कारण तथा शासन के उदासीन रवैये के चलते व आधुनिक उपकरण जैसे–इंटरनेट, यूट्यूब, टीवी के बढ़ते प्रभाव से ग्रामीण युवा प्रभावित हो रहे हैं। फलतः 'राउत नाचा' निरन्तर उपेक्षित हो रहा है। राउत (यादवों) के सामने सबसे बडी समस्या आज जीविकोपार्जन को लेकर है अपने परंपरागत कार्य से हटकर जीवन यापन करने के लिए उन्हें अन्यत्र कार्यों की ओर पलायन होने को विवश होना पड़ रहा हैं, जिससे उन्हें आने वाली पीढी को अपने लोक नृत्य 'राउत नाचा' को हस्तांतरित करने के लिए बड़ी चुनौती साबित हो रहा है।

अगर समय रहते इस दिशा में कोई ठोस पहल नहीं की गयी तो निश्चित ही यह समुदायिक नृत्य 'राउत नाचा' छत्तीसगढ़ के इतिहास के पन्नों में सिमट कर रह जाएगा। आधुनिकता के प्रभाव ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बदल कर रख दिया है, जिससे राउत (यादवों) के जीवन को ज्यादा प्रभावित किया है।

विगत वर्षों में कोरोना जैसी वैश्विक महामारी में भी राउत नाचा का मिला-जुला रूप देखने को मिला है, पहले की तुलना में आज राउत नाचा विलुप्त होता जा रहा है। इस दिशा में छत्तीसगढ़ शासन द्वारा आज

सहेजने व संवारने की कोशिश की जा रही है। छत्तीसगढ़ की प्रमुख महत्वाकांक्षी योजना 'नरवा गरवा घुरवा बारी' जैसी योजना इस दिशा में शासन की इच्छाशक्ति को दर्शा रही है। शासन द्वारा गायों को आधुनिक तकनीक से गौठान निर्माण कर गायों के लिए रहने-खाने की व्यवस्था की जा रही है, जिससे जरूर इस दिशा में प्रयास हो रहा है तथा गौठान में ही 2 रू. प्रति किलो की दर से गोबर खरीद कर गाँव में ही कंपोस्ट खाद बनायी जा रही है, जिससे लोगों में आधुनिकता के साथ-साथ हमारी छत्तीसगढ़ की गौरवशाली इतिहास परंपरा व संस्कृति को बचाये रखने में मील के पत्थर साबित हो सकते हैं। छत्तीसगढ़ जोकि पर्वतश्रेणी, नदियाँ, लोकगीत, लोक नृत्य यहाँ की तीज-त्यौहार की विविधताओं से समृद्ध राज्य है, जिसमें राउत नाचा का विशिष्ट स्थान है, उसे आज हमें सहेजने की, संरक्षण देने की व समर्थन की जरूरत है, ताकि छत्तीसगढ़ की पहचान को हम बचा कर रख सकें इसमें ना केवल शासन, बल्कि आम-जन का सहयोग भी अपरिहार्य है।

संदर्भ

1. छत्तीसगढ़ी लोक-जीवन और लोक साहित्य का अध्ययन : डॉ. शकुंतला वर्मा
2. लोक का अंतः संसार: जय प्रकाश
3. छत्तीसगढ़ी ग्रंथ अकादमी : डॉ. टी. के. वैष्णव
4. मड़ई पत्रिका बिलासपुर: डॉ. कालीचरण यादव
5. लोक मड़ई पत्रिका : राजनांदगाँव
6. इंटरनेट

मुरारी उपाध्याय,

शोधार्थी, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय,

दुर्ग, (छ.ग.)